

शासकीय उच्चरत माध्यमिक विद्यालय के प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।

चंद्रावती जोशी

भूमिका

“मापन किया जाने वाले व्यक्ति का प्रत्येक पहलू व्यक्तिगत भिन्नता का अंश है।”

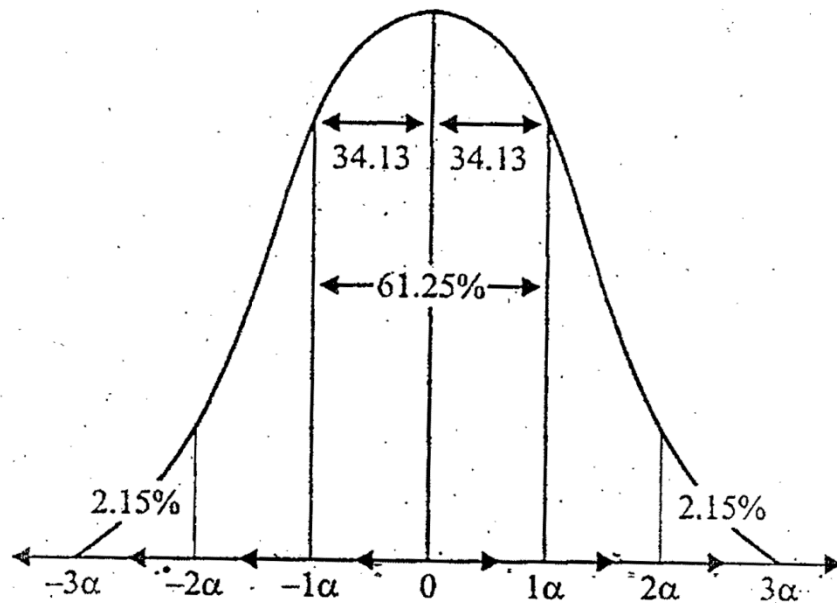
स्कीनर के अनुसार

मनुष्य-मनुष्य में अंतर होना उसके संबंध में सबसे अधिक स्पष्ट तथ्य है व्यक्ति अपने रूप और आकार में ही नहीं, व्यवहार में भी एक दूसरे से भिन्न होते हैं अभिन्न जुड़वा (identical twins) व्यक्तियों की भांति एक ही तरह के दिखायी पड़ने वाले व्यक्ति भी अपने-अपने व्यवहार में एक दूसरे से सर्वाधिक भिन्न होते हैं इस बात का एक सर्वव्यापी सत्य माना जा सकता है।

योग्यताओं के अनुरूप व्यक्तियों में व्यक्तिगत विभिन्नता पायी जाती हैं। कुछ योग्यताओं के संबंध में यह अंतर अपेक्षाकृत अधिक होता है। कील गाड़ने और कैंची से काटने के सहज कौशलों को प्रायः हम सब सीख लेते हैं, ऐसी क्रियाओं के अर्जन में हम एक-दूसरे से बहुत भिन्न नहीं होते। लेकिन अत्यन्त जटिल प्रकार के कौशलों को अर्जित करने में व्यक्तिगत अंतर स्पष्ट हो उठते हैं। किसी एक कौशल में दक्षतम व्यक्ति न्यूनतम दक्ष व्यक्ति की अपेक्षा कई गुना कुशल होता है। कुछ व्यक्ति किसी विशेष कौशल को सीख ही नहीं सकते। यह ऐसे कार्यों के संबंध में विशेषकर सत्य है, जिनमें उच्च कोटि के विचार शक्ति की आवश्यकता होती है, उदाहरणार्थ उच्चतर गणित में निष्णात व्यक्ति।

कदाचित् व्यक्तिगत विभिन्नता व्यक्ति के आकांक्षा स्तर एवं आत्मविश्वास को प्रभावित करती है। आकांक्षा स्तर से हमारा तात्पर्य आकांक्षा स्तर वह संभावित लक्ष्य है जो एक व्यक्ति स्वयं अपने कार्य-निष्पादन के समय निश्चित करता है लक्ष्यो व मूल्यों के प्रति व्यक्ति की इच्छा की तीव्रता ही आकांक्षा स्तर है अर्थात् बार-बार सफलता मिलने पर व्यक्ति

का आकांक्षा स्तर ऊंचा होता चला जाता है तथा बार-बार असफलता मिलने पर व्यक्ति का आकांक्षा स्तर गिरता चला जाता है व्यक्ति में आकांक्षाएँ एक जैसी नहीं होती उनमें व्यक्तिगत विभिन्नता पाये जाने के कारण विभिन्नता पायी जाती है। जिसे NPC Cruve के द्वारा सारणी क्रं. 1.2.1 में दर्शाया गया हैं।



इस वक्र के अनुसार एक कक्षा में 2.15% (निम्न बुद्धि) कमजोर छात्र व 2.15% (उच्च बुद्धि) उत्तम छात्र तथा 61.25% औसत छात्र होंगे जिसके अनुसार कमजोर छात्र व उत्तम छात्र तथा औसत छात्रों के आकांक्षा स्तर में अंतर पाया जाएगा। आकांक्षा स्तर में विभिन्नता होने से विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में भी विभिन्नता प्रलक्षित होगी।

बालक के अंदर शैशव अवस्था से ही आकांक्षा जन्म लेने लगती है। यह आकांक्षाएँ बालक के विकास के साथ-साथ तीव्र होने लगती है। यह आकांक्षाएँ कई प्रकार की होती है। बालक जब तीन वर्ष का होता है तब उसे घर के वातावरण से निकालकर स्कूली वातावरण में प्रवेश दिलाया जाता है, उस समय बालक के अंदर शैक्षिक आकांक्षाएँ उत्पन्न होने लगती है।

शिक्षा एक ही ऐसा माध्यम है जो बालक की आकांक्षाओं की पूरा करने में उसका सहयोग करती है। एवं किसी भी समाज की और राष्ट्र की उन्नति में छात्रों के आत्मविश्वास का

सार्थक प्रभाव पड़ता है। छात्रों में आत्मविश्वास का होना आवश्यक है यदि आत्मविश्वास उच्च होगा तो वह प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगा। आत्मविश्वास व्यक्ति का स्वयं के बारे में तथा अपने व्यवहार के बारे में ऐसा दृष्टीकोण, अवधारणा या विश्वास है जो समाज के अन्य सदस्यों में उनके प्रति दृष्टीकोण व अवधारणाओं से प्रभावित होता है तथा जो परिवेश के प्रति उसके प्रत्याक्षीकरण एवं व्यवहार के प्रभाव की प्रभावित करता है। परिपक्वता, बौद्धिक योग्यताएँ सीखने के अवसर, अनुभव, लिंग, आयु, सूचना, प्रतिपूर्ति, सामाजिक वातावरण आदि आत्मविश्वास को प्रभावित करता हैं।

अध्ययन के पश्चात् परिणामों से यह प्रमाणित होता है कि प्रथम पंक्ति व अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर व आत्मविश्वास में सार्थक अंतर है।

शोध का विषय

शासकीय उच्चरत माध्यमिक विद्यालय के प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन।

अध्ययन का उद्देश्य

अनुसंधान का प्रमुख उद्देश्य प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं आत्मविश्वास की समस्या को समझना एवं उन्हें दूर करना है। संक्षेप में अध्ययन के उद्देश्यों को निम्न रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

- (1) प्रथम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
- (2) अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का अध्ययन करना।
- (3) प्रथम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।
- (4) अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का अध्ययन करना।

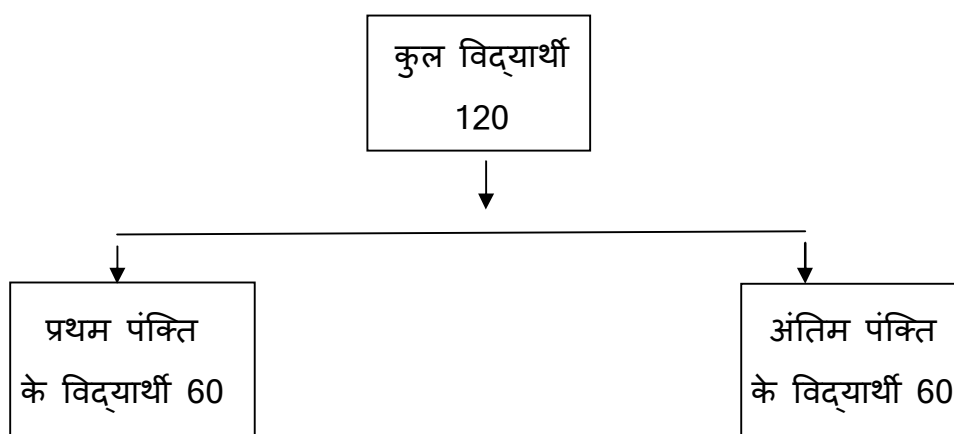
परिकल्पना

H₁- प्रथम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं अंतिम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया जाएगा।

H₂- प्रथम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों एवं अंतिम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अंतर नहीं पाया जाएगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत लघुशोध कार्य में रायपुर जिले के अन्तर्गत 6 शासकीय, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय लिये गये हैं। कुल 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया हैं। जिसमें 9वीं व 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों को लिया गया है। जिसमें प्रथम पंक्ति में 60 व अंतिम पंक्ति में 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।



उपकरण

इस लघुशोध में शोधकर्ता ने आकांक्षा स्तर के मापन हेतु डॉ. एम.ए. शाह. एवं डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है। एवं आत्मविश्वास के मापन हेतु डॉ. रेखा गुप्ता द्वारा निर्मित उपकरण का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों की प्राप्ति, व्याख्या एवं विश्लेषण

वर्गीकरण 2, सारणीयन तथा रेखाचित्र प्रस्तुतीकरण आंकड़ों के वर्गीकरण में प्रायः उनकी आवृत्ति वितरण के रूप में व्यवस्थित किया जाता है। सारणीयन से न केवल आंकड़ों को बल्कि उनके पारस्परिक संबंधों को भी स्पष्ट रूप से समझने में पर्याप्त सुविधा मिलती है इसी प्रकार जब आंकड़ों को रेखाचित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है तब उसके स्वरूप व विस्तार को भली-भांति समझा जा सकता है और उसकी प्रायः एक ही दृष्टिकोण से जटिल तथ्य सरलता व शीघ्रता से स्पष्ट होने लगता है। किसी शोध अध्ययन की अंतिम परिणिति

व्याख्या एवं विश्लेषण हैं, यही वह साधन है जो शोधकर्ता को एक निश्चित स्वरूप प्रदान करता है जिसकी सहायता से अनुसंधानकर्ता अपनी परिकल्पनाओं की पुष्टि तथा किसी नियम या मान्यता की सत्यता को सार्थक रूप में व्यक्त करता है। अनुसंधान प्रक्रिया में परिकल्पनाओं की रचना के पश्चात् उसके परिक्षण के लिए संकलित किए गए आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करने की आवश्यकता होती है जिसकी सहायता से हम अपने वांछित लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

विश्लेषण से प्राप्त परिणाम जो निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं उसे यथार्थ के आधार पर निष्कर्षीकरण करना होता है। जिसके अंतर्गत परिणाम से अभिप्राय सार्थकता स्तर के जाँच एवं मूल बातें निहित होती है जो समस्या से संबंधित दोनों चरों के संदर्भ में एक नई दिशा प्रदान करती है।

प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध में शोधकर्ता द्वारा चयन कि गई समस्या शासकिय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के प्रथम एवं अंतिम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

इस लघुशोध में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करने हेतु कुछ परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया एवं उसी परिकल्पना के विश्लेषण व विवेचना निम्न पंक्तियों में दर्शायी गयी है।

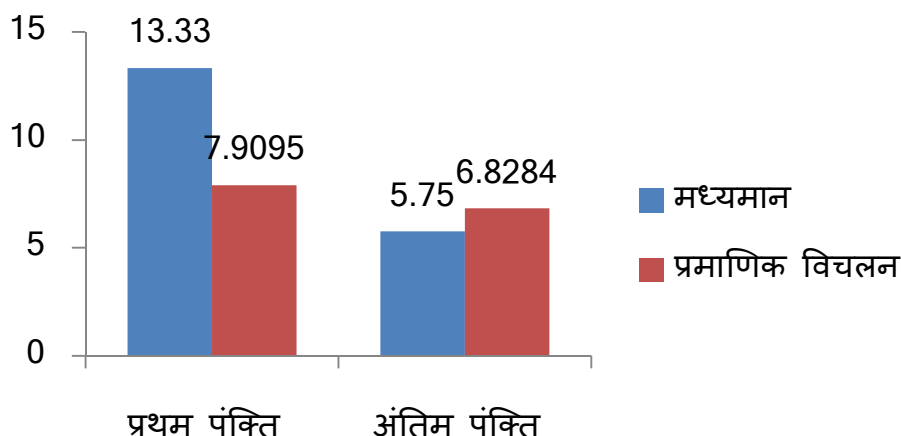
H₁- प्रथम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर एवं अंतिम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर नहीं पाया जाएगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उपरोक्त परिकल्पना की जाँच हेतु आकांक्षा स्तर से प्राप्त अंको को 'मध्यमान', 'प्रमाणिक विचलन', 't' मान की गणना की गयी है। इसमें जिसका स्पष्टीकरण सारणी क्रमांक 1.3.2 में किया गया है।

क्रं.	तुलनात्मक समुह	विद्यार्थियों की संख्या	चर	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	परीक्षण
1.	प्रथम पंक्ति	60	आकांक्षास्तर	13.33	7.9095	0.80
2.	अंतिम पंक्ति	60		5.75	5.75	

$df = 118$ ($0.05 = 1.98$) ($0.08 > 1.98$) सार्थक नहीं हैं।

प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का मध्यमान



विश्लेषण

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने पर प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का मध्यमान 13.35 व 5.75 है। प्रमाणिक विचलन 7.90 तथा 6.82 है। t मूल्य 0.80 है। df (degree of freedom) 118 है। t के मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t सारणी का अवलोकन ज्ञात करने के लिए t सारणी का अवलोकन किया गया जो $0.05 = 1.98$ है। जो कि गणना किये गये t मूल्य से अधिक है।

निष्कर्ष

($0.80 < 1.98$) अर्थात् 0.05 स्तर पर t का मान सार्थक नहीं हैं। अर्थात् प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में अंतर पाया जाएगा।

परिणाम के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकृत हुयी।

व्याख्या

शिक्षा की एक ऐसा माध्यम है जो बालक की आकांक्षाओं को पूरा करने में उसका सहयोग करती है।

प्रस्तुत लघुशोध में ली गई समस्या के अध्ययन में कक्षा 9वीं व 11वीं के प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर पर एक अध्ययन किया गया है।

इसमें 120 विद्यार्थियों का चयन किया गया है, जिसमें 60 विद्यार्थी प्रथम पंक्ति से तथा 60 विद्यार्थी अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों का चयन किया गया।

अध्ययन के पश्चात् परिणामों से यह प्रमाणित होता है कि प्रथम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर तथा अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर में सार्थक अंतर पाया गया है।

इसका कारण प्रथम पंक्ति के विद्यार्थियों की अपेक्षा अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों में अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने का सही मार्गदर्शन ना मिल पाना है। अर्थात् कहने का तात्पर्य यह है कि अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों को अपने आकांक्षाओं को पूरा करने का साधन व वातावरण नहीं प्राप्त होता है। जिसका परिणाम अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों का आकांक्षा स्तर प्रथम पंक्ति के विद्यार्थियों से कम प्रलक्षित होता है।

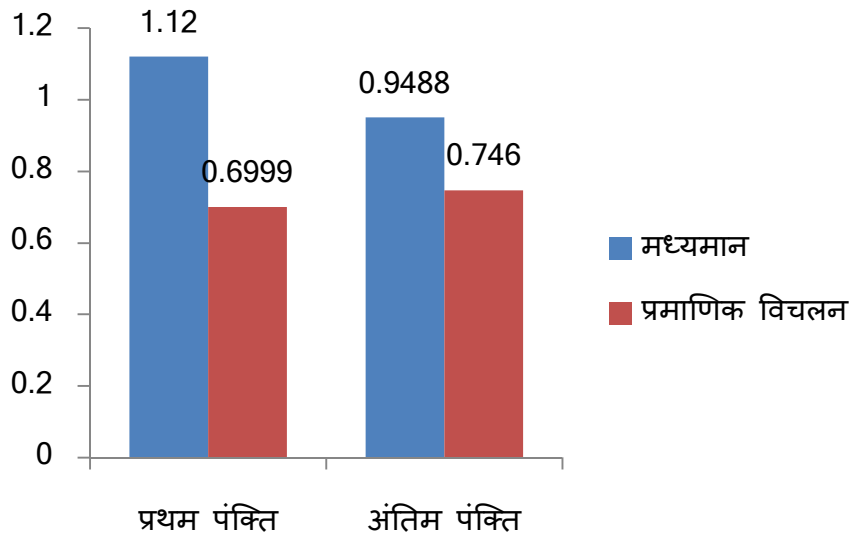
H2- प्रथम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों एवं अंतिम पंक्ति में बैठने वाले विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अंतर नहीं पाया जाएगा।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उपरोक्त परिकल्पना की जाँच हेतु आत्मविश्वास से प्राप्त अंको का मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, t परीक्षण, मान की गणना की गयी है। जिसका स्पष्टीकरण सारणी क्रमांक 1.3.3 में किया गया है।

क्रं.	तुलनात्मक समूह	विद्यार्थियों की संख्या	चर	मध्यमान	प्रमाणित विचलन	परीक्षण
1.	प्रथम पंक्ति	60	आत्मविश्वास	1.12.33	6.6999	1.38
2.	अंतिम पंक्ति	60		0.9488	0.746	

df = 118 (0.05 = 1.98) (1.38 > 1.98) सार्थक नहीं हैं।

प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का मध्यमान



विश्लेषण

उपरोक्त सारणी का अवलोकन करने प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का मध्यमान क्रमशः 1.12 व 0.94 है। प्रमाणिक विचलन क्रमशः 0.69 व 0.74 है। t मूल्य 1.38 है। df (degree of freedom) 118 है। t के मान की सार्थकता ज्ञात करने के लिए t सारणी का अवलोकन किया गया जो $0.05 = 1.98$ है जो की गणना किये गये t मूल्य से अधिक ($1.38 < 1.98$) है।

निष्कर्ष

($1.38 < 1.98$) अर्थात् 0.05 स्तर पर t का मान सार्थक नहीं हैं। अर्थात् प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अंतर पाया जाएगा।

परिणाम के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकृत हुई।

व्याख्या

प्रस्तुत लघुशोध में शोधकर्ता ने प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास का तुलनात्मक अध्ययन किया है। अध्ययन हेतु शोधकर्ता ने 9वीं व 11वीं कक्षा के प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों का चयन किया। जिसमें कुल 120

विद्यार्थियों का चयन किया गया 60 प्रथम पंक्ति व 60 अंतिम पंक्ति के विद्यार्थी साम्मलित है।

अध्ययन के पश्चात् शोधकर्ता ने पाया कि प्रथम पंक्ति एवं अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास में अंतर पाया गया है तथा अंतिम पंक्ति के विद्यार्थियों के आत्मविश्वास के निम्न होने का कारण उनका कक्षा में समायोजन ना कर पाना तथा अपने आप को प्रथम पंक्ति के बालकों की अपेक्षा कम प्रोत्सहित व अयोग्य समझना है।

सुझाव

- (1) बालकों का जीवन संघर्ष के योग्य बनाना चाहिए ताकि वे अपनी आकाक्षा के स्तर को उच्च एवं सुदृढ़ बना सकें।
- (2) शाला का वातावरण इस प्रकार का हो सभी बालको को समान अवसर प्राप्त हो।
- (3) बालको को स्वयं करके सीखने का तथा उनके द्वारा किये गये कार्यों को प्रोत्साहन दिया जाये।
- (4) बालकों के शारीरिक एवं मानसिक योग्यता व क्षमता को ध्यान में रखकर उन्हें कार्य का अवसर प्रदान करें।
- (5) पुस्तकालय, विभिन्न प्रकार के खेल इत्यादि का संगठन विद्यालयों के अंतर्गत किया जायें। जिससे वे अपने आकाक्षाओं के अनुकूल भाग ले सकें।
- (6) विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के विकास के लिए उनकी चेतना को जागरूक बनाने का प्रयास किया जाये।
- (7) विद्यार्थियों में स्व चेतना का विकास करने के लिए उनकी रुचियों व क्षमताओं के अनुसार शिक्षा देने का प्रयास किया जाये।
- (8) विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए अधिक से अधिक नितियों विकसित की जाए।
- (9) विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर होने की प्रवृत्ति को विकसित किया जाए जिससे उनका आत्मविश्वास उच्च व सुदृढ़ हो।
- (10) प्रत्येक विद्यार्थियों की रुचि योग्यता के अनुसार उन्हें प्रोत्साहन दे।

References

1. Agrawal & Brij Bhushan (1967) "Self Confidence & scholastic achievement" Journal of Educational Research and Extension, IV (2).
2. Agnihotry, Rekha (1986) "Effects of Sub-culture affiliation and sex on self confidence" Journal of Education and Psychology Volume-XXXX IV No. 2 July and October, 1986 P. NO. 25.
3. Gupta L.P. (1978) "A study of the personal characteristics and academic achievement of scheduled caste and backward class students of Meerut University, Meerut, P. No. 157-166.
4. Kalia, Ashok K. Levine, tamar (2000) "Computer selfconfidence and computer experience in relation to computer-related attitudes and commitment to learning" Indian Educational Abstracts, Volume-2, No.-2, July 2002, P. No. 23.
5. Krupzak, W.P. (1972) "Relationship among students and academic ability and students, achievement". Dissertation Abstract International, III, 7 Pg. 228A.
6. Sharma, K.L. (1978) "A comparative study of self confidence among high and low achievement and intelligence groups of students of class tenth in urban school of Bareilly, Unpublished Ph. D (Edu.) Agra University. Agra.
7. ए.बी.जे.ओ. (1970) नाइजीरियन किशोरों का शैक्षणिक एवं व्यवसायिक आकांक्षा का अध्ययन।
8. बुच. एम.बी. (1972-78) सेकण्ड सर्वे आफ रिसर्च एंड एजुकेशन इनसाइक्लोपीडिया।
9. कुपुस्वामी बी. आकांक्षा का अध्ययन जनरल साइकोलाजिकल रिसर्च मैसूर विश्वविद्यालय।